विमुद्रीकरण के बाद RBI पर यह आरोप लगे हैं कि उसने अपनी स्वतंत्रता को त्याग दिया है। क्या आप सहमत हैं? अपने उत्तर का न्यायसंगत तर्क दें?

लोककल्याणी सरकार का कार्य जनता के व्यापक हित में फैसला लेना है। सरकार द्वारा केन्द्रीय बैंक व अन्य नियामक संस्था को प्रशासन में मदद हेतु स्थापित किया गया है। इस प्रकार यह संस्था (आरबीआई) मौद्रिक नीति को निर्धारित तो करती है परन्तु उसे सरकार ही दिशा-निर्देश प्रदान करती है।

विमुद्रीकरण के सारे प्रसंग के बाद आरबीआई की स्वतंत्रता को लेकर प्रश्न उठने लगे हैं कि क्यों बैंक ने अपने निर्णय इतनी जल्दी व अव्यवस्थित ढंग से लिये हैं। परन्तु इससे यह नहीं कहा जा सकता कि बैंक ने अपनी स्वतंत्रता त्याग दी है क्योंकि आर.बी. आई के 1934 एक्ट में यह साफ लिखा है कि सरकार केन्द्रीय बैंक को जनहित के लिये दिशा-निर्देश दे सकती है जिसका पालन बैंक को करना होगा।

GENERAL STUDIES HINDI

दूसरे पक्ष को देखे तो केन्द्रीय बैंक का कार्य मौद्रिक नीति का नियंत्रण करना होता है। ताकि मुद्रास्फीती व तरल की मात्रा को नियंत्रित रखा जा सके। इसके अलावा बैंक अन्य बैंको को पैसा भी देती है। परन्तु कभी भी सरकार द्वारा इस कार्य में कोई हस्तक्षेप नहीं देखा गया है। स्वायत्ता की बहस का मूल बिन्दु गवर्नर की नियुक्ति हो सकता है बैंक के कार्य नहीं होने चाहिए। क्योंकि केन्द्रीय बैंक के प्रावधान में ही है कि वह सरकार की मदद करें।

अन्तत: विकसित देशों के स्वतंत्र केन्द्रीय बैंक के विचार को भारत जैसे विकासशील देशों के परिपेक्ष्य में नहीं देखना चाहिए। विकसित देश में मुद्रास्फीती बढ़ने से प्रभाव नहीं पड़ता है परन्तु भारत में मूल्य की स्थिरता अनिवार्य है और इस संदर्भ में भारतीय केन्द्रीय बैंक की स्वतंत्रता सुरक्षित ही देखी जा रही है।

GENERAL STUDIES HINDI

जर्मनी के एकीकरण में बिस्मार्क की नीति का समालोचनात्मक परीक्षण करें?

जर्मनी का एकीकरण प्रशा के नेतृत्व में पूर्ण हुआ जिसका कार्य वहाँ कूटनीति चांसलर बिस्मार्क ने किया। उसका मानना था कि इस युग की समस्या बहुमत व प्रस्ताव से नहीं वरन् "रक्त व लौह" से हल होगी। इसी नीति का पालन करते हुये उसने जर्मनी का एकीकरण प्रारम्भ किया।

बिस्मार्क की एक बड़ी विशेषता थी की वह अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का प्रयोग बड़ी कुशलता से अपने हितों की रक्षा करने लिये करता था। उसने आर्थिक रूप से राज्यों को जोड़ने के लिये "जोलवेरीन" समझौता किया जो आस्ट्रिया को उससे दूर रखा। परन्तु डेनमार्क को हराने हेतु उसी आस्ट्रिया का सहयोग ले लिया। जब "सेडोवा का युद्ध" हुआ तो फ्रांस को लालच देकर उससे दूर रखा व आस्ट्रिया को अकेला कर उसे हराया। परन्तु पुनः जब प्रशा की बारी आयी तो उसी फ्रांस को "सिडॉन" के युद्ध

में पराजित किया।

इस सारे घटनाक्रम से यह स्पष्ट हो जाता है कि बिस्मार्क एक चतुर बाजीगर था जो 5 गेंदों से खेलता था जिसमें से दो उसके हाथों में व तीन हवा में होती थी। उसकी इसी गुट नीति के कारण उसने फ्रांस, आस्ट्रिया व इंग्लैंड से शत्रुता को प्रोत्साहित कर दिया था। उसकी नीतियाँ लोकतांत्रिक मूल्यों व अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के प्रतिकूल होने के कारण सदा आलोचना का विषय रही हैं।

यद्यपि बिस्मार्क ने "लौह व रक्त" की नीति से जर्मनी के एकीकरण को लगभग पूर्ण किया। परन्तु उसकी नीति के कारण ही गुट नीति, अस्त्र-शस्त्र की दौड़ व अविश्वास का माहौल यूरोप में उत्पन्न हुआ जिसने कहीं न कहीं प्रथम विश्व युद्ध को प्रोत्साहित किया।

GENERAL STUDIES HINDI

स्वच्छ भारत को प्राप्त करने के लिये कुछ बहुत भारी बाधायें हैं जिसे स्वच्छ भारत मिशन के तहत स्वच्छ भारत बनाने के लिये दूर करने की जरूरत है। ये बाधायें क्या है व स्वच्छ भारत की सफलता के लिये इनको हटाने का क्या महत्व है। चर्चा करें।

स्वच्छता के साथ स्वास्थ्य सीधा जुड़ा हुआ है। स्वच्छ भारत बनाने के लिये बड़े पैमाने पर कार्य किये जा रहे हैं। राजनैतिक, खिलाड़ी व कई नामी लोग इससे जुड़े हैं परन्तु इस अभियान की सबसे बड़ी समस्या यह है कि इसकी सफलता हेतु जन-भागीदारी बहुत जरूरी है, इसके लिए जागरूकता जिसमें भारत में कमी पायी जाती है। जनता स्वच्छता का कार्य प्रशासन व सरकार का समझती है। साथ ही प्रशासन भी इसे डर व दबाव से करवाना चाहता है जो इसमें बाधा बन रहा है।

स्वच्छ भारत अब एक जन आंदोलन लगने लगा है परन्तु इसके साथ कुछ बाधायें हैं—

1. स्वच्छ भारत के लिये आसपास के वातावरण की स्वच्छता के साथ ही लोगों की आदतों में बदलाव की जरूरी है परन्तु

GENERAL STUDIES HINDI

यह कार्य केवल शौचालय बनाने से पूरा नहीं होगा।

② शौचालय बना भी दिये जाते हैं तो लोगों की आदतों में बदलाव, सूखे शौचालय की सफाई व पानी की कमी जैसी व्यावहारिक समस्या का क्या होगा।

③ सप्ताह या माह में एक दिन साफ सफाई करना या मीडिया में विज्ञापन व फिल्मी सितारों को तो जोड़ा जा रहा है उसी तरह लोगों को भी जोड़ा जाना चाहिए था।

④ स्वच्छ भारत न केवल साफ-सफाई तक सीमित है बल्कि इससे कई संक्रमणकारी बीमारी से भी मुक्ति मिल सकती है। साफ भारत, सफाई पुलिन, प्राचीन विरासत पर्यटन को बढ़ायेगा व भारत की छवि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुधरेगा। परन्तु इसके लिए इस कार्यक्रम को स्थानीय लोगों, पंचायत से ऊपरी स्तर पर लाना होगा न कि ऊपरी स्तर से नीचे ले जाना होगा। केवल शौचालय बनाकर ही नहीं लोगों को उसके फायदे भी सही से समझाने की जरूरत है।

"चुनौतियों के बावजूद भूमण्डलीकरण ने हमारे संसार को बेहतर स्थान बनाया है और हमें आज भी इसकी जरूरत है।" चर्चा करें।

- विभिन्न देशों के बीच व्यापार, शिक्षा, प्रौद्योगिकी व संस्कृति के आदान-प्रदान व विश्व को एक गांव की तरह बनाने के उद्देश्य से भूमण्डलीकरण की अवधारणा को अपनाया गया। भारत का ही उदाहरण लिया जाये तो जहाँ 1991 में स्वदेशी आर्थिक अवधारणा से आर्थिक संकट आ गया था वहीं IMF की सहायता व पी.वी. नरसिम्हाराव के नेतृत्वकारी कदम से आज भूमण्डलीकरण से ही विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में शामिल किया है।

भूमण्डलीकरण के सामने बदलते वैश्विक परिवेश में कई चुनौतियां भी रही हैं। इनमें से प्रमुख इस प्रकार है -

① गरीबी, संस्कृति के पतन के लिए भूमण्डलीकरण को जिम्मेदार मानना
② विभिन्न मानवीय मूल्यों, बलात्कार, चोरी व यहां तक की आतंकवाद को भी भूमण्डलीकरण का कारण माना जाता रहा है।
③ किसी भी देश के संसाधनों को दूसरे देश द्वारा उपयोग करना
④ FDI व FII को हमेशा लोगों ने स्वदेशी हितों के विरुद्ध बताया है
⑤ बदलते वैश्विक परिदृश्य में विभिन्न देशों के बीच राजनीतिक तनाव भी भूमण्डलीकरण के सामने प्रमुख चुनौती रही है।

इन सब चुनौतियों के बावजूद भूमण्डलीकरण ने निम्न प्रकार विश्व को एक बेहतर व समानतायुक्त जगह बनाया है -

① किसी भी देश द्वारा प्रमुख नयी तकनीक अन्य देशों को देना भूमण्डलीकरण से ही संभव हो पाया है
② विभिन्न देशों के प्राकृतिक संसाधनों व उन देशों की आवश्यकता में विषमता को भूमण्डलीकरण ने कम किया है।
③ जहां कुछ देश तकनीक सम्पन्न हैं तो कुछ तेल व गैस में समृद्ध तो कुछ खाद्यान्न सम्पन्न, इन सबमें वैश्विक स्तर पर सामंजस्य बनाया है
④ विभिन्न देशों के बीच आवश्यकतानुसार व्यापार का सुगम होना।
⑤ अफ्रीका के कुछ पिछड़े देशों को भी आज अमेरिका जैसी सुविधाओं का अहसास भूमण्डलीकरण से ही संभव हो पाया है
⑥ विभिन्न देशों के बीच लोगों के आवागमन, शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी आदान-प्रदान व सांस्कृतिक मेल-जोल के लिए भूमण्डलीकरण ने अच्छा योगदान दिया है।

आज के बदलते परिदृश्य में जलवायु परिवर्तन, आर्थिक मंदी, आतंकवाद, विभिन्न देशों के बीच राजनैतिक तनाव, कम पड़ते प्राकृतिक संसाधन व बढ़ती जनसंख्या तथा विभिन्न राष्ट्रों के बीच बढ़ती आपसी निर्भरता भूमण्डलीकरण का समर्थन करती है, अतः अभी भी भूमण्डलीकरण को और बढ़ाया जाना है जो आज के विश्व की आवश्यकता है।

भारत में शहरों को अधिक समावेशी व सतत् रहने की जगह बनाने के लिये क्या उपाय अपनाये जा सकते हैं?

शहरों को विकास का इंजन माना जाता है क्योंकि देश की कामकाजी आबादी का 26% भाग यहीं निवास करता है। गत कुछ दशकों में सेवा क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पादन में योगदान तेजी से बढ़ा है व देश की लगभग 31% आबादी शहरों में निवास करने लगी है। इस कारण ऐसी नीति की जरूरत है जिससे सभी को समान सुविधा, जरूरत अनुसार वेतन व साफ पर्यावरण रहने के लिये मिले।

शहरों में कुल आबादी का 17% झुग्गी में निवास करता है। उन्हें स्वच्छ जल, पर्याप्त प्रकाश तक उपलब्ध नहीं हो पाता। इस हेतु "प्रीफैब्रिकेटेड" निर्माण किये जा सकते हैं। इसके साथ ही बड़े शहरों के आसपास "प्रतिध्रुवीय ध्रुवकीय शहर" का निर्माण किया जाये जैसे दिल्ली के आसपास नोएडा है ताकि जनसंख्या दबाव कम हो सके।

इसके अलावा लोगों के पर्याप्त परिवहन सुविधा के लिए मेट्रो के साथ-साथ CNG बसों व सार्वजनिक द्रुत बोर्ड ट्रीपरिवहन प्रणाली हो ताकि पर्यावरण अनुकूल परिवहन के साथ समान रूप से परिवहन सुविधा हो।

भारत सरकार ने इसी कल्पना को लेकर "स्मार्ट सिटी" "अमृत" मिशन आरम्भ किया है। ताकि पर्यावरण मैत्री व विकास के फायदे से भरपूर जीवन लोगों को दिया जा सके परन्तु इससे पहले लोगों को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराने के लिये उपाय किये जाने चाहिये। साथ ही स्वरोजगार व कौशल विकास के जरिये से इन्हें खुद के रोजगार के लिये तैयार करना चाहिये।

आज शहरों की सबसे बड़ी समस्या है कि यहाँ सार्वजनिक खुले स्थान (पार्क, बगीचे) की कमी है। इसके लिये पार्किंग व अन्य चीजों को व्यवस्थित कर जगह बनानी चाहिए।

निष्कर्षतः स्मार्ट समावेशी व सतत शहरों का निर्माण समावेशी, सतत स्मार्ट गाँव के अभाव में अधूरा है। क्योंकि अकुशल रोजगार की शहरों में कमी है अतः गाँव से पलायन रोकने के लिये लोगों को वहीं रोजगार/स्वरोजगार/कौशलविकास के अवसर प्रदान करने की व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

GS HINDI

Hyperloop में क्या विज्ञान और प्रौद्योगिकी शामिल है? क्या यह हमारे जो यातायात का तरीका है उसको बदल सकती है? इस तथ्य की जाँच करे।

अमेरिकी आत्मप्रमोर द्वारा विकसित की गई परिवहन प्रणाली जिसमे हाइपरलूप वाहन कंक्रीट से बने खंभो पर बनाई गई ट्यूबस के अंदर 1200 कि.मी प्रति घंटा की स्पीड से दूरी तय करता है।

वर्तमान युग मे लोगो के पास समय की कमी तथा तकनीकी महत्व के कारण यह परिवहन का अच्छा साधन निम्न कारणो से सिद्ध हो सकता है —

1. 1200 कि.मी / घंटा उच्च स्पीड से चलने से निश्चित लोगो को समय की बचत होगी जैसे चेन्नई से बेंगलुरु की दूरी बस द्वारा 6·30 घंटे तथा रेल से 6 घंटे मे सफर करने की बजाय हाइपरलूप से 30 मिनट का समय लगेगा।
2. इसमे यात्रा खर्च बस खर्च से भी कम होगा।
3. लोगो के सुविधानुकूल होने के कारण सडको, हाइवे पर ट्रैफिक कम होगा जिससे दुर्घटना, प्रदूषण की मात्रा कम होगी।
4. पर्यावरण हितैषी होने के कारण कार्बन उत्सर्जन मे कमी लाने के उपायो की श्रृंखला मे अच्छा उपाय है।

हाइपरलूप को लोगो के जीवन में

GENERAL STUDIES HINDI

जाने के लिए निम्न चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है –

I. देश में हाइपरलूप ~~सिस्टम~~ चलाने के लिए सरकार को एक बड़े फंड की जरूरत है।

II. पहले वायु परिवहन के कारण रेल परिवहन की स्थिति पर दबाव बना हुआ है। हाइपरलूप से यात्रा टिकट कम होने के कारण सड़क परिवहन की स्थिति पर प्रभाव पड़ सकता है।

III. देश में इसको चलाने के लिए Infrastructure की जरूरत है जिसके क्षेत्र में भारत अभी पीछे है।

IV. सुरक्षा के दृष्टिकोण से अभी तक इस तकनीक को प्रमाणित किया जाना बाकी है।

GENERAL STUDIES HINDI

"विज्ञान वरदान है, अभिशाप भी"। निःसंदेह भारत जैसी अर्थव्यवस्था के लिए यह तकनीक आवश्यक है। परंतु अभी भारत को wait and watch की नीति अपनानी चाहिए ताकि कहीं और इसकी सफलता सिद्ध हो जाए।

Hyperloop में क्या निदान है और प्रौद्योगिकी शामिल है? क्या यह हमारा जो यातायात का तरीका है उसको बदल सकती है? इस तथ्य की जांच करें।

हाल ही में Hyperloop नामक तकनीकी काफी चर्चा में रही जिसकी प्रमुख वजह है इसका यातायात को संचालित करने का अनूठा तरीका जो कि वर्तमान यातायात व्यवस्था को पूर्णतया बदलने का माद्दा रखता है।

Hyperloop तकनीकि — * हाइपरलूप को भविष्य की परिवहन व्यवस्था का प्रारंभिक स्वरूप कहा जा सकता है जिसमें मेट्रो ट्रेनों की खम्भों तर्ज पर बड़े-बड़े खम्भों पर एक खास ट्यूब लगाई जाएगी (जो दो स्थानों को आपस में जोड़ेगी।

* ट्यूब के अन्दर छोटे-छोटे पॉड्स को संचालित किया जाएगा। यह पॉड विद्युत चुम्बकत्व की प्रक्रिया द्वारा गति प्राप्त करेंगे और अपने गंतव्य के ओर अग्रसर होंगे।
* ट्यूब के अन्दर संचालित होने वाले पॉड्स की गति 1200km/hr के आस-पास होगी।

नि:संदेह यह तकनीकी किसी भी देश की परिवहन व्यवस्था को बदलने का माद्दा रखती है। वर्तमान में जिस प्रकार से जनसंख्या घनत्व बढ़ रहा है और उसकी वजह से सड़कों पर गाड़ियों की जनसंख्या बढ़ रही है ऐसे में यह तकनीकी सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी बदलाव ला सकती है। चूँकि इस तकनीकी में ज्यादा लम्बी दूरी की यात्रा को कुछ समय में तय किया जा सकता है ऐसे

GENERAL STUDIES HINDI

में यह तकनीकि समय की बचत करने में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है।

इस तकनीकी का एक दूसरा पहलू यह भी है कि इस तकनीकी का मानव स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ सकता है।

चूंकि यह तकनीकी पूरी तरह से संचालन में नहीं आयी है इसलिए इसके बारे में अधिक कुछ नहीं कहे जा सकते परन्तु यदि यह तकनीकी पूरी तरह से सभी पैमानों पर खरी उतरती है तथा [illegible] से पूरी सभी चिंताओं को दूर कर देती है तो निःसंदेह यह प्रशासन के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन होगा।

GENERAL STUDIES HINDI

⇒ पिछले 5 वर्षों में भारत में बाल अपराधों की संख्या में 47% की वृद्धि हुई है जो कि देश के भविष्य कहे जाने वाले समुदाय की गंभीर स्थिति का सूचक है। बाल अपराध बढ़ने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं -

① चूंकि रोटी, कपड़ा और मकान मूलभूत आवश्यकताएँ हैं और गरीबी इनकी प्राप्ति में बाधक है। अत: न चाहते हुये भी अपराधी प्रवृत्ति अपनानी पड़ती है।

② सामाजिक, पारिवारिक और शैक्षिक दबाव भी अपराधी प्रवृत्ति को जन्म देता है।

③ अपनी प्रदर्शन (Fashion) संबंधी शौक की पूर्ति के लिए भी बच्चे आपराधिक गतिविधियों में संलग्न होते हैं या फिर गलत संगति के कारण से इन गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं।

④ वर्तमान में इंटरनेट की सुलभ उपलब्धता जहाँ एक ओर विकास का सूचक है वहीं दूसरी ओर इसका 'काला चेहरा' भी है जो नकारात्मकता से युक्त है तथा बच्चों को भ्रमित कर अपराधीकरण को बढ़ावा दे रहा है।

⑤ प्रशासन की बेरुखी भी इसके बढ़ने का कारण है क्योंकि बाल अपराधों के नियंत्रण के लिए कोई ठोस कानून का प्रावधान नहीं है।

GENERAL STUDIES HINDI

<u>उपाय</u> :-

• → चूंकि गरीबी सबसे बड़ा प्रेरक है। अत: इसे दूर किये बिना इस समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता। अत: प्रशासन के साथ समाज को इसके निराकरण की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

→ बच्चों की स्कूली शिक्षा में सामाजिक एवं नैतिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए।

→ परिवार, समाज तथा स्कूल के वातावरण का ही सर्वाधिक प्रभाव किसी के व्यक्तित्व पर होता है। अत: सभी को अपनी - अपनी

जिम्मेदारी उठानी चाहिए।

- यदि कोई बाल अपराधी है तो परिवार, समाज एवं स्कूल की जिम्मेदारी है कि उसके अपराध को दूर करना चाहिए ना कि उसे। उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार द्वारा उसके व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है।

"कोई भी पैदाइशी अपराधी नहीं होता, अतः परिस्थिति उसे अपराधी बनाती है।" सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण का बच्चों के चारित्रिक निर्माण में महत्वपूर्ण भागीदारी होती है। अतः बिना समाज के और परिवार के सहयोग से इस बुराई का उन्मूलन असंभव है।

GENERAL STUDIES HINDI